SHODH SAMAGAM

Online ISSN : 2581-6918

समुदाय की अवधारणा के सैद्धांतिक आधार पर शिक्षा में

DR. SANJAY GUHEY, Ragistrar,
Chhattisgarh State Open School, Raipur, Chhattisgarh

सार :–

इस लेख में शिक्षा में समुदाय की अवधारणा के सैद्धांतिक आधारों के व्यावहारिक पक्ष पर प्रकाश डालने क प्रयास किया गया । इस लेख के माध्यम से शिक्षा में उपयोग की जा रही समुदाय, नैतिक समुदाय, अध्ययनार्थी समुदाय, लोकतान्त्रिक समुदाय, देखभाल समुदाय, सामंजस्य प्रबंधन एवं सहयोगशील अनुशासन, इत्यादि की उपयोगिता को समझने का प्रयास किया गया है । साथ ही साथ शिक्षा समुदायों को केन्द्र में रखकर किए गये विभिन्न अध्ययनों के संक्षिप्त वर्णन के माध्यम से इसकी उपयोगिता को समझने का प्रयास किया गया है ।

मुख्य शब्द :–

विद्यालय, कक्षा, समुदाय, शैक्षिक दृष्टिकोण।

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Autor :
DR. SANJAY GUHEY,
Ragistrar,
Chhattisgarh State Open School,
Raipur, Chhattisgarh

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/03/2019
Revised on : -----
Accepted on : 13/02/2019
Plagiarism : 02% on 11/03/2019

शिक्षा में समुदायिकता की अवधारणा नयी नहीं है इसकी शुरूवार बीसवीं शताब्दी के आरंभ में शुरू हुए प्रगतिवादी तथा पुनर्रचनावादी आंदोलनों में दिखाई देती है इन आंदोलनों ने केवल शिक्षा के स्वरूप पर बल्कि ज्ञान के स्वरूप, शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक एवं विद्यार्थी की भूमिका तथा शिक्षा के उद्देश्यों पर व्यापक चर्चा की शुरूवात की । वहीं दूसरी ओर जी.स्टेनली हाल एवं जॉन डीवी जैसे प्रगतिवादी विचारकों ने

पाठ्यचर्या दर्शन को विद्याथी केन्द्रित करने की ऐसी मुहिम छेड़ी की जिसने तत्कालीन शिक्षा में बड़े बदलाओं का सूत्रपात किया । अब इस बात को जोर दिया जाने लगा कि शिक्षा व्यवस्था के केन्द्र में पाठ्यक्रम के स्थान पर विद्यार्थी है । शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी अधिक से अधिक क्रियाशील हो एवं शिक्षण में विद्यार्थी की रूचि को अधिक ध्यान दी जानी लगी है । जहाँ एक ओर प्रगतिवादी विचारकों ने शिक्षक की भूमिका को ज्ञान प्रदान करने वाले के स्थान पर विद्यार्थियों के लिए पथप्रदर्शक होने पर बल दिया वहीं जॉर्ज गांट्स जैसे पुनर्रचनावादी विचारकों ने शिक्षा में शिक्षक की प्रगतिवादी भूमिका की वकालत की । साथ ही साथ यह सुझाव भी प्रस्तुत किया कि विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं के समाधान खोजकर्ता के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

बावजूद इसके प्रगतिवादियों और पुनर्रचनवादी आंदोलनों के पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था में मुख्य पथप्रदर्शक नहीं थी । जैसे विद्वान निकलते है कि 1957 के स्पूतनिक प्रथम के प्रक्षेपण से पूर्व यह विचार मुख्य धारा का अंग नहीं बन पाए थे । अंतरिक्ष – प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप प्रगतिवादी तथा पुनर्रचनावादी आंदोलन संयुक्त राज्य अमेरिका में विद्यालयी सुधारों के पथ–प्रदर्शक बन पाए । शिक्षा की इस बहस के परिणामस्वरूप अकादिमिक स्तर पर सीखने की प्रक्रिया के नवीनीकरण तथा व्याख्यान विधि जैसे पारंपरिक विधि से समस्या समाधान की विधियों का केंद्र बन गया । 1960 के दशक में प्रगतिवादी विचारों का तेजी से प्रचार हुआ । इस दौरान पढ़ाई – लिखाई कि नई पद्धति का तेजी से प्रयोग होने लगा जिनमें विद्यार्थी की रूचियों को केंद्र में रखा जाना, अंतसबंध विषयों को महत्व दिया जाना, विद्यार्थियों में स्वाभिमान को विकसित करने और तत्कलीन शिक्षण क्रियाकलापों का विकल्प खोजने पर ध्यान केन्द्रित किया गया ।

प्रगतिवादी एवं पुनर्रचनावादी सुधारों के बाद भी शिक्षक – विद्यार्थी, विद्यार्थी – विद्यार्थी के बीच व्यक्तिगत कक्षा संम्बन्धों को सीमित महत्व दिया गया । पियाजे 1965 एवं वाइगोस्की 1987 के विचारो के परिणामस्वरूप बच्चों को खाली सलेट समझने की सोच में बदलाव आया । उदाहरण के लिए, वाइगोस्की के सीखने की प्रक्रिया में बच्चों का अपने आस–पास के लोगों के साथ होने वाल सामाजिक अंतक्रिया एवं उपने साथियों के साथ होने वाला पारस्परिक सम्पर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । वाईगोस्की के सामाजिक रचनात्मक्तावादी परिपेक्ष्य एवं प्रक्रिया को मात्व प्रदान किया जिसमें सामाजिक संदर्भ का स्थान अधिक था । जहाँ तक पियाजे के विचारों एवं सिद्धांतो की बात इन विचारों से सहमति रखने वाले विद्ववानों ने बच्चों की स्वायत्तता, समस्या समाधान, विकास की खोज एवं सामाजिक पारस्परिक क्रिया के दृष्टिकोण को महत्व प्रदान किया ।

उपरोक्त सभी विद्ववानों ने बच्चें एवं सीखने की अवाधारणाओं की बृहतर रूप से स्वीकार किया । ये सिद्धांतकार विद्यालय को एक सामाजिक मंच के रूप में देखते है । जहाँ विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ पारस्परिक क्रिया और शिक्षक के सहयोगपूर्ण संबंधों का लाभ उठा सकें । अंत में समुदाय की अवधारणा को लोकतान्त्रिक एवं चिंतन में आत्मसात कर लिया गया जिसके परिणामस्वरूप कक्षागत संबंध कक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया ।

समुदाय की अवधारणा :–

शिक्षा में समुदाय की भूमिका को समझने से पूर्व समुदाय की अवधारणा को समझना आवश्यक है । शिक्षा समुदाय की भूमिका को समझने से पूर्व समुदाय की अवधारणा को समझना आवश्यक है । गेंसफील्ड ने समुदाय शब्द के दो अर्थ बतलाए है पहला – भौगोलिक स्थिति को दर्शाने के लिए जैसे पड़ोसी कस्बा, शहर इत्यादि तथा दूसरा – मानवीय संबंधों का क्षेत्रीय लक्षणों के बिना वर्णन । समान्यतः समुदाय शब्द का प्रयोग मानवीय संबंधों के लाभ को समझाने के संदर्भ में किया जाता है । रॉगोफ समुदाय के धारणा को इस प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास करते है कि लोगो के बीच ऐसे संबंध जिनके पीछे समान उद्देश्य को प्राप्त करेन के लिए स्थायित्व एवं पूर्ण भागीदारी के साथ समान प्रयास किए जाते है, समुदायिक गठन का एक अन्य स्परूप समावेशीकरण एवं परिचितता की धारणा पर आधिारित है । मैकमिलन व चाविस उपरोक्त समुदाय की सभी अवधारणाओं को सम्मिलित करके एक परिभाषा के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते है जिसके अनुसार समुदाय से अभिप्राय है सदस्यों में अपनेपन के भावों, एक–दूसरे सदस्यों के प्रति सम्मान, समूह के प्रति सम्मान तथा दूसरे सदस्यों की आवश्यकताओं के लिए मिलकर प्रयास करने की प्रतिबद्धता हो होना ।

शिक्षा में समुदाय :–

शिक्षा में समुदाय की अवधारणा का उपयोग विभिन्न संदर्भों में किया जाता है शिक्षा में समुदाय की अवधारणा को विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्त किया जातात है जैसे नैतिक समुदाय, अध्ययनकर्ताओं का समुदाय, देखभाल करने वाला समुदाय, न्यायी समुदाय, संबंधादर्शी समुदाय, विद्यालय समुदाय तथा लोकतांत्रिक समुदाय इत्यादि । शिक्षा में समुदायिक गठन के दृष्टिकोण से बड़े स्तर पर सम्पूर्ण विद्यालय व छोटे स्तर पर कक्षागत गतिविधियों को लिया जाता है । शिक्षा में समुदाय के विभिन्न प्रकारों के बावजूद वॉटसन एवं बत्तीस्टिच (2006) ने इसे छः प्रकार के शैक्षिक समुदायों में विभाजित किया है न्यायी समुदाय, नैतिक समुदाय, अध्ययनार्थी समुदाय, लोकतांन्त्रिक समुदाय, देखभाल समुदाय, सांजस्य प्रबंधन, एवं सहयोगशील अनुशासन ।

न्यायी समुदाय :–

न्यायी समुदाय को लोरेंस कोहलबर्ग द्वारा स्थापित किया जिसे बाद में पियाजे के कार्य के कार्य के साथ जोड़ा गया । न्यायी समुदाय सामाजिक संस्थाओं, व्यक्तिगत अनुभवों और नैतिक आचरण के माध्यम से कक्षा एवं विद्यालय के बीच आवश्यक मध्यस्थ की भूमिका निर्वाह करता है । इस शैक्षिक समुदाय के मॉडल का उपयोग उच्च स्तरीय विद्यालयों में लोकतान्त्रिक विचारों एवं नैतिक विकास को प्रोत्सहित करने के लिए किया जाता है । न्यायी समुदाय में नियमित रूप से शिक्षक – विद्यार्थी सलाहकार समिति में नियमों एवं नीतियों पर चर्चा पर जोर दिया जाता है । शिक्षक– विद्यार्थी में एक दूसरे के लिए ''हम'' तथा विद्यालय के संदर्भ में ''हमारा'' की धारणा के विकास पर जोर दिया जाता है । न्यायी समुदाय में

विद्यालयी गतिविधियों में विद्यार्थी व शिक्षक से समान अपेक्षाएं रखता है तथा एक व्यक्ति, एक मत दर्शन को विद्यालयी गतिविधियों में समावेशित करेन पर जोर देता है । इस समुदाय को दो भागों में विभाजित किया गया है शिक्षक एवं प्रशासन, पाठ्यक्रम प्रस्तुतिकरण को पहले भाग में रखा गया है तथा विद्यार्थियों को अपने विचार रखने तथा प्रतिनिधित्व का अधिकार को दूसरे भाग में रखा गया है ।

नैतिक/रचनावादी समुदाय :–

नैतिक/रचनावादी समुदाय की अवधारणा मुख्य रूप से पूर्व विद्यालयी एवं प्राथमिक विद्यालयी स्तर पर बच्चों के सामाजिक, नैतिक तथा बौद्धिक विकास को व्यवस्थित करने में सहायता प्रदान करती है । नैतिक कक्षा की अवधारणा का विकास, पियाजे के बच्चों के नैतिक विकास पर काम से, कोहलबर्ग के नैतिक तर्क के विभिन्न विकासवाद स्तरों और सेलमन के अंतसंबंध विषय समझ सिद्धांत (जो पियाने के कार्य का विस्तारित रूप है) के आध ाार पर हुआ है । नैतिक कक्षा विद्यालय में विद्यार्थी के शिक्षक से संबंध, अपने सहपाठियों से संबंध, अकादमिक तथा अन्य नियमों के साथ संबंध को केंद्र में रखकर बढ़ावा देता है ।

इस प्रकार के शैक्षिक समुदाय का उद्देश्य बच्चों को अपने जीवन एवं पारस्परिक संबंधों के दौरान मनोवैज्ञानिक, भावात्मक, बौद्धिक आवश्यकता एवं परिस्थितियों में मार्गदर्शन प्रदान करना है । नैतिक/रचनात्मक समुदाय के अनुसार शिक्षक कक्षा में बाल केन्द्रित सहयोगपूर्ण उपागम अपनाएँगें जिसमें अंतिम निर्णय लेने की शक्ति उसके पास होगी, समकक्ष के साथ पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा देकर तथा नैतिक परिचर्या का प्रयोग करके शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा किया जाता है ।

अभ्यर्थी समुदाय :–

अभ्यार्थी समुदाय को विभिन्न संदर्भों में प्रयोग किया जाता है । वॉटसन एवं बत्तीस्टिच (2006) अभ्यार्थीं समुदाय को सामाजिक एवं सांस्कृतिक सिद्धांत के आधार पर वर्गीकृत करते है । अभ्यार्थी समुदाय का मॉडल थर्पओ एवं गैलीमोर (1988) के ''सामाजिक पारस्परिक व्यवहार से बाहर उच्च अनुक्रम प्रकार्य'' से लिया गया है (पृष्ठ क्रमांक 7)। अभ्यार्थी समुदाय के संदर्भ में सुझाव देते हे कि यह मॉडल विद्यार्थियों में उच्च स्तरीय काम व्यस्तता से उच्च स्तरीय विचारशीलता का कौशल विकसीत करता है ।

अभ्यार्थी समुदाय मॉडल में ''खुली कक्षा'' की धारणा को केंद्र में रखा गया है । खुली कक्षा बच्चों को अधिगम प्रक्रिया में सहयोग पूर्ण व्यस्तता रखी जाती है, पुरा ध्यान बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के द्वारा संबंधों के निर्माण से जोड़ना होता है, सीखने की गतिविधियों का निर्धारण विद्यार्थी एवं शिक्षक मिलकर तय करते है, दिशा निर्देशों का निर्माण विद्याार्थियों की रूचि पर आधारित होता है तथा विद्यार्थियों के माता – पिता से विशेष रूप से अपेक्षा की जाती है कि सप्ताह में कम से कम तीन घंटे का समय अपने बच्चों के साथ व्यतीत करें (रॉगोफ एट0 ऑल0 2001)।

लोकतान्त्रिक समुदाय :–

जॉन डीवी (1966) को लोकतान्त्रिक समुदाय की संकल्पना का जन्मदाता माना जाता है डीवी समीक्षात्मक सिद्धांतकार और सम्पूर्ण भाषा उपागम की रचनात्मक सिद्धांकार और सम्पूर्ण भाषा उपागम की रचनात्मकता के समर्थन थे । शैक्षिक लोकतान्त्रिक समुदाय की ध ाारणा बच्चें के व्यवहार, चरित्र एवं लोकतान्त्रिक समाज के सकारात्मक सदस्य के रूप में विद्यालय की चहारदीवारी के बाहरी जीवन से सीधी संबंधित मानती है । इस समुदाय का मूल उद्देश्य लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सहायक व्यवहार, समुदाय, चरित्र नागरिकता तथा समाजिक न्याय की भावना को प्रोत्साहन देना है, लोकतान्त्रिक समुदाय विद्यार्थियों में समीक्षातमक अध्ययन की योग्यता विकसित करने वाली पठन एवं लेखन सामाग्री के विकास का समर्थन करता है । लोकतान्त्रिक समुदाय के अंतर्गत शिक्षक का मुख्य उद्देश्य अपने विद्यार्थियों को उन्हे समाज का अच्छा सदस्य बनने में सहायता प्रदान करना है ।

देखभाल समुदाय :–

देखभाल समुदाय नोडिंग की देखभाल की अवधारणा, लगाव सिद्धांत तथा मानव प्रोत्साहन पर किए गए शोधकार्य जैसे डेसी एवं रेयान (1990), सोलोमन एवं बत्तीस्टिच (2006) पर आधारित है । इस समुदाय में व्यक्तिगत संबंधों की परवाह करने की भावना, समुदाय की संरचना, समुदाय की संरचना का अनिवार्य घटक है । देखभाल समुदाय के केन्द्र विद्यार्थी की कक्षा में परवाह की जाने के भाव का विकास करना है । देखभाल समुदाय शैक्षिक मॉडल के उदाहरण के रूप चाइल्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट को लिया जा सकता है यह संयुक्त राज्य अमेरिका में प्राथमिक विद्यालय पर चलाया गया कार्यक्रम है (सोलोमन एट ऑल 1988)।

चाइल्ड डेवलपमेंट प्रोजक्ट कक्षा प्रबंधन में विद्यार्थी केन्द्रित उपागम, सहयोग प्रधान क्रिया एवं समान विचार–विमर्श को महत्व देता है । चाइल्ड डेवलपमेंट के अंतर्गत शिक्षक –विद्यार्थी संबंधों, विद्यार्थी–विद्यार्थी संबंधों, साथ ही विद्यार्थी के सामाजिक नैतिक विकास के लिए पूर्वलक्षित योजनाएँ उपलब्ध करता है ।

सामंजस्य प्रबंधन एवं सहकारी :–

अभ्यास समुदाय :–

सामंजस्य प्रबंधन एवं सहकारी अभ्यास समुदाय का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तारित है इसमें प्राथमिक स्तर से लेकर बारहवीं स्तर तक के विद्यार्थियों को शमिल किया जाता है । सामंजस्य प्रबंधन एवं सहकारी अभ्यास की स्थापना जेरोम फ्रेबर्ग (1994) द्वारा की गयी थी जो कार्ल रोजर के अध्ययन से प्रभावित था (रोजर एंड फ्रेबर्ग 1994)। सामंजस्य प्रबंधन एवं सहकारी अभ्यास, समुदाय मॉडल कक्षागत गतिविधयों की रोकथाम, देखभाल, सहयोग और समुदाय इत्यादि विषय वस्तुओं पर आधारित करने का सुझाव देता है । फ्रेबर्ग इस कार्यक्रम प्रभावशाली दिशा निर्देशों का समूह मानते है जिसमें सुव्यवस्थित कक्षा के माध्यम से शिक्षक–विद्यार्थी आपसी सहयोग से अनुशासन विकसित करने का प्रयास किया जाता है ।

विद्यालय और कक्षा समुदाय के लाभ :–

वॉटसन और बत्तीस्टिच (2006) का मानना है कि कक्षा समुदाय के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है कि इसके महत्व के विरोध में अभी तक कोई प्रभावपूर्ण तर्क प्रस्तुत नहीं किया जा सका है । विभिन्न शिक्षाविशारदों, सिद्धांतकार तथा शोधकर्ता सकारात्मक कक्षा या विद्यालय समुदाय को कड़ी के रूप में देखते है । शैक्षिक कक्षा समुदाय और विद्यालयों समुदाय आधारित शोध दर्शाते है कि विद्यालय के विभिन्न स्तरों, जैसे पूर्व प्राथमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उच्चतम विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है । कक्षा समुदाय और विद्यालय समुदाय पर आधारित शोध दर्शाते है कि शैक्षिक समुदाय मॉडल के प्रयोग से विद्यार्थियो की उपस्थिति और स्मृति में सकारात्मक कक्षा समुदाय और विद्यालय समुदाय अकादमिक प्रेरणा एवं उपलब्धि के साथ विद्यालय की वचनबद्धता के प्रोत्साहन में योगदान करता है । यह दोनो को अंदर समाहित किए हुए है । यह अध्ययन अपने अंदर कक्षा समुदाय के महत्वपूर्ण कारकों को भी निहित किए हुए है । चयनित अध्ययन हमें सम्बन्धों के लाभ विशेषकर कक्षागत संबंधों, विभिन्न विषयों जैसे गणित और सामाजिक अध्ययन में प्रयोग किए जा सकते है । विद्यालयों से जुड़े होने और सदस्यता के भाव के प्रतिफल विद्यार्थी–शिक्षक के व्यवहार में सुधार तथा प्रेरणा कारकों को बढ़ाने वाले समुदाय के तत्वों के माध्यम से समुदाय की उपयोगिता को प्रदर्शित करने के लिए किया गया है ।

शिक्षक – विद्यार्थी और विद्यार्थी–विद्यार्थी के सकारात्मक संबंध का परिणाम कक्षा समुदाय की रचना है । रेयान और पैट्रिक (2001) द्वारा आठवीं कक्षा के स्तर के 233 विद्यार्थीयों पर किए गए सर्वेक्षण में यह तथ्य सशक्त रूप से सामने आया कि विद्यार्थी कक्षा में अपने सहपाठियों से परिचित थे । वे एक दूसरे से बातचीत करते थे तथा शिक्षक सार्वजनिक मंच पर विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर विचार विमर्श नहीं करते थे । ऐसे कक्षागत वातावरण विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका अदा करने में सहायक सिद्ध हो रही थी। सामुदायिक संबंध से संबंधित लोकतांन्त्रिक मूल्यो व प्रवृत्तियों को बढ़ावा देता है । साथ ही साथ, शोध यह सुझाव भी देता है कि नैतिक, तार्किक, प्रोढ़ कौशल व्यवहार जैसे सहभागिता, मददगार एवं अन्य लोागों के प्रति अभिरूचि सकारात्मक कक्षा समुदाय और विद्यालय समुदाय के परिणाम में अधिक सुधार लाता है । यह शोध सुझाव देता है कि व्यवहार संबंधित समस्याएँ जैसे नशीली दवाओं के सेवन, अपराधवृत्ति, हिंसा, जोखिम भरे यौन व्यवहार तथा आत्महत्या जैसे विचार जैसे गंभीर मुद्दों को सुलझाने में सहायक है । विद्यालय में अकादमिक वर्ष के प्रारंभ से विद्यालय समुदाय और कक्षा समुदाय उपागम के प्रयोग से विद्यार्थियों के अकादमिक जीवनवृत्ति, अकादमिक प्रवृत्तियों, प्रेरणा एवं प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया है ।

निष्कर्ष :–

शिक्षा में समुदाय की अवधारणा के सैद्धांतिक आधार पक्ष के अध्ययन से यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है कि शैक्षिक प्रक्रिया में सामुदायिकता की भावना का विकास अत्यंत

प्रभावकारी सिद्ध होती है । जहॉ एक ओर समुदायिकता की भावना विद्यार्थी में विद्यालय एवं कक्षा में अपनत्व की अनुभूति का एहसास उत्पन्न करती है, वहीं दूसरी तरफ वह विद्यार्थी के स्वाभाविक गुणों के विकास की रफ्तार को बढ़ा देती है । समुदायिकता की भावना ना केवल विद्यालयी व्यवस्था में विद्यार्थी को सामंजस्य स्थापित करने का सुअवसर प्रदान करती है अपितु भावी सामाजिक भूमिका के लिए भी तैयार करती है । यह कहना कदाचित गलत नहीं होगा कि विद्यालयी समुदाय एवं कक्षा समुदाय की भावना लोकतान्त्रिक मूल्यों के विकास में अभूतपूर्व भूमिका का निर्वाह कर सकती है। साथ ही साथ यह हमारी विद्यालयी व्यवस्था में विद्यार्थियों के अनुकूल वातावरण का विकास करता है ।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. Delpit L.D. (1995). Other people's children : Cultural conflict in the classroom. New York : New Press
2. Devries, R. & Zen B. (1994) Moral classrooms, moral children : Creating a constructivist atmosphere in early education. New York : Teachers college Press
3. Dlliot S.N. (1995). The Responsive classroom approach : Its effectiveness and acceptablility. Washington, DC: The Center for Systemic Educational change District for Columbia Public School.
4. Freiberg H. J. (1999). Consistency management and cooperative discipline : From tourists to citizens in the classroom. Bostaon : Allyn & Bacon
5. Gusfield J.R. (1978). The community : Acritical response. New York : Harper Colophon.
6. Goldstein L.S. (1997), Teaching with love : A feminist approach to early childhood education. New York : Peter Lang.
7. shodhganga.inflibnet.ac.in
8. www.ncert.nic.in
9. nios.ac.in
10. edudel.nic.in
11. bhojvirtualuniversity.com

****